ओणम

Onam

निबंध नंबर :- 01

भारत पर्वो एवं लोक संस्कृतियों का अद्भुत प्रदेश है। कश्मीर से कन्याकुमारी यानि भारत के उत्तरी छोर से दक्षिणी किनारे तक यदि हम सफर करें तो हर दिन हर जगह एक नये पर्व से हमारा सहज ही साक्षात्कार होगा। हर पर्व अपने-आप में निराला, अद्भुत एवं मनोहारी लगेगा। कहीं बैसाखी, कहीं होली, कहीं दशहरा तो कहीं दिवाली। कोई भी पर्व देखें-एक अजीब-सी अनुभूति होती है। हर पर्व में एक अनोखी संस्कृति, एक नया आदर्श, एक अपनापन और एक अजीब-सी माटी की गंध। यही अनोखापन हमारे देश की महानता है, हमारी अनमोल धरोहर है और हमारी सेहत का राज भी।

“ऐसे ही पर्वो की श्रृंखला में एक नाम आता है ओणम | यूँ तो यह पर्व केरल की जमीन से जुड़ा है लेकिन इसके साथ जो कहानी जुड़ी है वह हमारी संस्कृति का अभिन्न अध्याय हैं, सर्वकालिक और सार्वभौम है। यह कहानी सनातन धर्म का ही हिस्सा है।

लोकमत के अनुसार जो पौराणिक कथा ओणम के साथ जुड़ी उसका नायक केरल प्रदेश पर राज्य करने वाला महान् राजा महाबलि था। कहा जाता है कि महाबलि महाप्रतापी, आदर्श, धर्मपरायण, प्रजावत्सल एवं सत्पुरुष थे। उनके राज्य में सुख-समृद्धि की बहुलता थी। वें महादानी थे। उनकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गई कि वे राजा नहीं भगवान बन गए अपनी प्रजा के लिए। राज्य में हर जगह उनकी पूजा होने लगी। देवता भला इसे कैसे संह पाते। देवराज इन्द्र ने षड्यन्त्र किया। उन्होंने भगवान विष्णु से सहायता माँगी। विष्णु वामन का वेष बनाकर महाबलि की धरती पर उतरे। पहले तो उन्होंने महाबलि को बचनबद्ध कर लिया फिर उससे तीन पग जमीन माँगी। महादानी महाबलि के लिए तो यह साधारण-सी बात थी। परन्तु जैसे ही राजा ने इसकी हामी भरी विष्णु ने अपना विराट् रूप ले लिया। एक पग. में उन्होंने सारी धरती नाप लीं और दूसरे में आकाश, तीसरे पग के लिए कुछ बचा ही नहीं। महाबलि ने तुरन्त ही अपना शरीर अर्पित कर दिया। अपना सब कुछ दान करने के बाद अब धरती पर वह रह भी नहीं सकता था। अतः विष्णु ने उसे पाताल लोक में जाने

की आज्ञा दी जाने से पहले विष्णु ने उसे एक वरदान माँगने को कहा। महाबलि को अपनी प्रजा से अगाध प्रेम था। अतः उसने वर्ष में एक बार धरती पर आकर अपनी प्रजा को देखने की इच्छा प्रकट की। विष्णु ने इसे मान लिया। कहा जाता कि हर वर्ष श्रावण महीने के श्रवण नक्षत्र में राजा महाबलि अपनी प्रजा को देखने आते हैं। चूँकि मलयालम भाषा में श्रवण नक्षण को ओणम कहा जाता है। इसीलिए इस पर्व का नाम भी ओणम ही पड़ गया।

ओणम के अवसर पर सम्पूर्ण प्रदेश की जनता अपने देवतुल्य राजा की प्रतिक्षा में अपने घरों को सजाती है। चारों ओर खुशी का वातावरण फैल जाता है। दीप जलाये। जाते हैं, वंदनवार लगाए जाते हैं। हर तरह धरती को सजाया जाता है। रंगोली द्वारा धरती का भव्य श्रृंगार किया जाता है। रंगोली से सजी धरती पर भगवान विष्णु और राजा महाबलि की प्रतिमाएँ स्थापित की जाती हैं। दोनों की ही भव्य पूजा की जाती है। सभी नये परिधानों में सजकर तरह-तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते। हैं। मंदिरों में भव्य उत्सव मनाये जाते हैं। मनोरंजन के कार्यक्रमों जैसे नौका दौड़, हाथियों के जुलूस का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों के पीछे लोगों का उद्देश्य होता है कि उनके पूज्य राजा अपनी प्रजा को सुखी देखकर प्रसन्न हों। इस दिन सभी लोग जी खोलकर दान भी करते हैं जो महाबलि की दानशीलता का प्रतीक है।

इस अवसर पर कई तरह के नृत्य-प्रस्तुति की भी परम्परा है। कत्थकलीं जो केरल का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य है, का आयोजन काफी बड़े पैमाने पर किया जाता है। युवतियाँ सफेद साड़ी पहनती हैं और बालों पर फूलों की वैणियाँ सजाकर नाचती हैं। ये सारे कार्यक्रम व्यापक रूप से किये जाते हैं। इसमें सभी लोग हिस्सा लेते हैं।

ओणम सुख-समृद्धि, प्रेम-सौहार्द एवं परस्पर प्रेम एवं सहयोग का संदेश लेकर _ आता है। इसके पीछे चाहे कोई भी कहानी जुड़ी हो, इतना तो स्पष्ट है कि यह हमारी संस्कृति का आईना है। हमारी भव्य विरासता का प्रतीक है। हमारे जीवन की ताजगी है। हमें साल में एक बार ही सही एक ऐसी ताजगी दे जाता है जो हमारी धमनियों में वर्षभर नयेपन का संचार करता रहता है।

निबंध नंबर :- 02

ओनम

Onam Festival

ओनम केरला के लोगों का एक प्रसिद्ध त्यौहार है। लोगों का विश्वास है कि महाबलिपरम के राजा महाबलि ने हजारों वर्ष पहले उन पर दया बरसाई थी। हर साल भगवान विष्ण के वरदान से लोगों के साथ रहता है। केरला के लोग हर वर्ष अगस्त या सितंबर के महीने में उनके आने का इंतज़ार करते हैं। वह हर घर में आता है इसलिए सभी अपने घरों की सफाई करते हैं तथा उन्हें सजाते हैं।

घरों के द्वार को खूबसूरती से सजाया जाता है। लोग द्वार पर राजा के स्वागत में रंगोली बनाते हैं। वह राजा इतना शक्तिशाली था कि तीनों लोकों-स्वर्ग, पृथ्वी तथा नरक पर उसका राज था। तभी देवताओं के राजा इंद्र को यह डर पैदा हो गया कि कहीं वह उसका सिंहासन न छीन ले। वह भगवान विष्णु के पास गया। भगवान विष्णु ने देवताओं का पक्ष लिया। वे महाबलि के पास गए तथा उस से तीन कदम जमीन की मांग की। उन्होंने दो ही कदमों में धरती तथा स्वर्ग को नाप लिया। तभी महाबली ने उन्हें अपना सिर दे दिया। तीसरे कदम ने आ सकता है। उसे पाताल लोक भेज दिया। उसे यह आदेश दिया गया कि वर्ष में एक बार वह धरती पर

राजा ओनम के दिन धरती पर आता है। उनके आने की खुशी पूरे महीने मनाई जाती है। लड़कियों के सुन्दर कपड़े तथा गहने पर्व की सुन्दरता को और अधिक निखारते हैं। वे संगीत के साथ कत्थक नृत्य प्रस्तुत करती हैं। पालतू जानवरों को भी खूबसूरती से सजाया जाता है। यह सारा इंतजाम महाबली के आगमन के लिए किया जाता है। हाथियों के द्वारा शोभा यात्रा। निकाली जाती है। यह राज्य के सभी शहरों में निकाली जाती है।

ओनम के त्यौहार की शाम अंधेरा देखने को नहीं मिलता। इस दिन दीवाली की तरह ही। घरों तथा गलियों को रोशन किया जाता है। महाबलि इस दिन लोगों को आत्मिक रूप से। मिलते हैं। अगले दिन लोग अपने दोस्तों तथा रिश्तेदारों से मिलते हैं। वे एक दूसरों को केवल मिठाइयां ही नहीं बल्कि नारंगी कपड़े भी भेंट करते हैं। महाबली को भी विदाई की भेंट के। तौर पर नारंगी वस्त्र दिए जाते हैं।